ग्रामीण समुदाय की आजीविका वृद्धि हेतु कृषि-वानिकी हस्तक्षेप पर कार्यशाला की रिपोर्ट

Workshop Report on Agro-forestry Interventions for Livelihood Enhancement of Rural Community

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसन्धान संस्थान, शिमला ने #आज़ादी के अमृत महोत्सव एवं #मिशन लाइफ के अंतर्गत 20 जुलाई, 2023 को "ग्रामीण समुदाय की आजीविका वृद्धि हेतु कृषि-वानिकी हस्तक्षेप पर कार्यशाला का आयोजन बड़ागाँव, रझाणा पंचायत, शिमला, (हि॰प्र॰) में किया । शुरुआत में, डॉ॰ जोगिन्द्र सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने निदेशक, प्रभागाध्यक्ष विस्तार एवं समस्त ग्रामीणों का स्वागत किया और कार्यशाला का उदेश्य लोगों को बताया । संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने प्रतिभागियों का कार्यशाला में आने के लिए धन्यवाद किया और आशा जताई कि लोग इस कार्यशाला से लाभान्वित होंगे । इसके बाद उन्होनें विभिन्न वानिकी प्रजाति मुख्यतः चारा प्रजातियों के पौधों की नर्सरी तकनीक के विषय में लोगों को जानकारी दी । उन्होंने प्रतिभागियों को केंचुआ खाद बनाने का भी सुझाव दिया और कहा कि इसके प्रयोग से किसान अपनी लागत कम करने के साथ-साथ उत्पाद की गुणवत्ता एवं उससे मिलने वाले लाभ में वृद्धि कर सकते हैं । डॉ॰ शर्मा ने कहा कि हमें अपने आस पास जितना हो सके खाली पड़े भू-क्षेत्र में अधिक से अधिक पेड़ लगाने का प्रयास करना चाहिए जिससे लोगों की चारा की जरूरत पूरी होने के साथ-साथ क्षेत्र का वातावरण भी अच्छा होगा । संस्थान ने मॉडल गाँव बड़ागाँव के लोगों की मांग पर इन चारा प्रजातियों के पौधे नर्सरी में उगाये हैं और लोगों से आग्रह किया कि जो पौधे आप रोपित कर रहे हैं तीन-चार वर्षों तक़ उनके सरंक्षण का विशेष ध्यान रखें । डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ ने बताया कि लोगों के सहयोग से संस्थान बड़ागाँव क्षेत्र में विभिन्न वानिकी गतिविधियां कर रहा है । किसानों की आजीवका वृद्धि हेतु कृषि वानिकी के महत्व को बताया और कहा कि कृषि वानिकी लोगों की आर्थिकी में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है । क्षेत्र की जलवायु महत्वपूर्ण औषधीय पौधों की खेती के लिए उपयुक्त है और औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल के रूप में उगा कर अतिरिक्त आय ले सकते हैं । औषधीय पौधे जैसे कि मुश्कबाला, चोरा, तुलसी, महामेंदा, वनक्षा, पत्थर चट्टा आदि अंतरवर्तीय फसल के रूप में उगा सकते हैं । उन्होंने बताया की संस्थान नें औषधीय पौधों को अंतरवर्तीय फसल के रूप में उगाने के मॉडल विकसित किए हैं और उन्होनें इसकी जानकारी लोगो के साथ सांझा की । उन्होनें आगे बताया कि संस्थान ने बड़ागाँव में पोलोनिया वृक्ष को डम्पिंग साइट में रोपित कर इसे स्थिर बनाया है और साथ में लोग इसकी पत्तियों को चारा के लिए भी उपयोग कर रहे हैं। डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी ने मृदा-अपरदन बचाव के बारे में लोगों को जागरूक किया। उन्होंने बताया कि बड़ागाँव नाले के किनारों से भूमि कटाव रोकने के लिए संस्थान ने बांस एवं एवं अन्य वानिकी प्रजाति के पौधों का पौधरोपण किया है और लोगों से आग्रह किया कि इस पौधरोपण क्षेत्र को सरंक्षित करने में सहयोग करे । पौधों को लोगों के उपयोग के लिए ही लगाया गया है । इसके अलावा उन्होंने मिशन लाइफ के उद्देश्य के बारे में भी बताया । कार्यशाला के अंत में किसानों को चारा वृक्ष प्रजातियों जैसे कि बियूल, खिड़क, कचनार एवं लियुसीनिया के 300 पौधे बांटे गए । रझाणा पंचायत के उप प्रधान श्री मुकुन्द मोहन शांडिल ने कहा कि संस्थान द्वारा उपलब्ध करवाये गये पौधे लोगों की चारा प्रजातियों की मांग पूरी की और इनके पौधरोपण से गाँव की जैविक विविधता में भी बृद्धि होगी । उन्होंने चारा प्रजातियों के पौधे उपलब्ध करवाने एवं ज्ञानवर्धक कार्यशाला के आयोजन हेतु संस्थान का आभार व्यक्त किया । कार्यक्रम में श्री कुलवंत राय गुलशन, वरिष्ठ तकनीशियन, श्री राजेन्द्र पाल, वरिष्ठ तकनीशियन एवं श्री मुरत सिंह, उप वन राज़िक़ एवं ग्रामीणो सहित 45 लोग उपस्थित रहे ।

कार्यक्रम की झलकियाँ

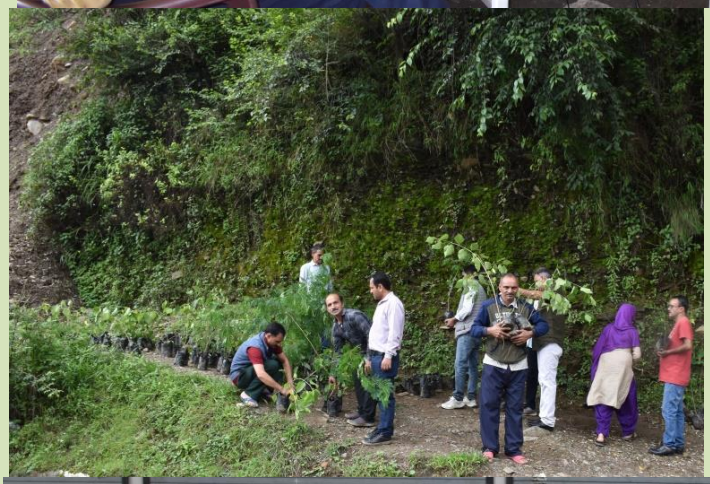

LiFE
ग्रामीण समुदाय की आजीविका वृद्धि हेतु
कृषि वानिकी हस्तक्षेप पर कार्यशाला
दिनांक : 20,जुलाई , 2023

LiFE
ग्रामीण समुदाय की आजीविका वृद्धि हेतु
कृषि वानिकी हस्तक्षेप पर कार्यशाला
दिनांक : 20,जुलाई , 2023
आयोजक : भा.वा.अ.शि.प.-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

****